बदनसीब

Rehimabeebi
II P. D. C. (S.-2)

भर रहा आकाश तारों से
गरज रहा सागर लहरों से।
नाच रहे पेड पवन में
खिल रही कलियाँ उल्लास में
दरद भरी दुनिया है सागर
पार करना है इसे दूभर।
कौन रहे दिल के किनारे
कौन सुने मन की कहानी।
चान्दनी रात है, शांति है
पर जीवन में चलती है आन्धी।
वह रही है मन में दुख - नहीं
बढ रही है फिर भी प्यास।
बिना सहारा, हूँ मैं अकेली
जीती रही कोई एक अभागिन।

इमली की छाया में

Ambalangadan Mohamed,
II M. A. (Eng. Litt.)

रजनी
खुशी में
उन्मत्त हो, आज
हँस रही है
चौदह साल की
एक कन्या की भान्ति;
चाँदनी
उसकी भोली हँसी,
अब छा जाएगी
चारों ओर।

ऊपर है
खुका आसमान;
हाय! वही है
खुदा का गुलिस्तान।
वहाँ
सरदी में
काले बादलों के बीच
एक क्षण
खिला हुआ
अनुपम अद्भुत फूल है
वह मुस्कुराता चाँद।

उस
सुरम्य सुमन की
अच्युत छवि से आकृष्ट
अगिनित किशोरियों की
शर्मीली आँखें हैं
वे चमकीले तारे।
इस नशीले
पल की नीरवता में,
इसी इमली की छाया में
प्रिये,
तेरी गोद में लेट, मैं
देखूँगा सपना हसीन।

क लि यु ग

K. N. Soman
II B. Sc. Physics

एक दिन नारद विष्णुलोक में आये। वे अपनी सहज परिहास द्योतक हंसी के साथ भगवान विष्णु से बोले - आप सदा गोपिकाओं के बारे में सोचते रहते हैं। विष्णु के भाल पर चिंता की रेखाएँ स्पष्ट दिखाई देती थी। भगवान ने नारद से कहा — "तुम तमाशा छोड दो, मैं मर्त्यलोक के बारे में बहुत चिंतित हूँ। वहाँ कलियुग का विकराल शासन चल रहा है।" नारद विष्णु की ओर देखते रहे। मानों कुछ भी उसकी समझ में नहीं आया हो। विष्णु ने नारद को समझाया — "मर्त्यलोक में दुष्टों के निग्रह और शिष्टों की रक्षा के लिए मुझे एक और जन्म लेना है। नारद ने भगवान को खुश करने के लिए कहा — आप निश्चिंत रहिए, मैं भूमि में पहुँच कर सब ठीक कर आता हूँ। भगवान ने मुस्कुराकर नारद को अनुमति दी।

नारद मर्त्यलोक के कालिकट शहर में आये। पहले एक बार शहर की परिक्रमा कर देखने को सोचा। हाथ में एक भिक्षा पात्र लेकर भिखारी के वेश में निकले। सवेरे से शाम तक भीख माँगने पर उसको एक पैसा भी नहीं मिला शाम को भूख और थकावट के कारण वे सडक के किनारे थोडा आराम करने बैठे। उस समय तीन चार युवतियाँ उस ओर आ रही थीं।

एक ने कहा — देखो, वह देखने में कितना सुन्दर है

दूसरी ने समझाया छोडो, बुडढा है

तीसरी ने कहा—बुडढा है तो क्या हुआ, स्वस्थ दिखाई देता है, सुन्दर है, चलो उससे बात करें। नारद को मालूम हुआ कि ये उनके बारे में ही बोल रही हैं।

पहली ने नारद से पूछा — तुम कहाँ के रहने वाले हो, यहाँ पर इस समय क्यों बैठे हो।

दूसरी ने पूछा — चलो, उठो। हमारे साथ चलो।

तीसरी ने बात व्यक्त की — "चलो दोस्त, आज की रात हमारे साथ बिताओ। आज कल के जवान निकम्मे होते हैं, बुडढे ही अच्छे होते हैं। चलो।"

नारद ने शान्त स्वर में कहा — मैं एक वृद्ध मनुष्य हूँ, मुझे छोड दो। तुम लोगों का आग्रह सफल नहीं होगा।" युवतियाँ नारद को कोसते हुए चली गयीं।

थोडी देर बाद और तीन लडकियाँ उस रास्ते से आयीं। नारद के पास भिक्षा पात्र देख कर वे रुक गयीं। उनमें से एक ने पूछा — क्यों दोस्त, आज कितना मिला, पात्र तो खाली है।

नारद ने पूछा — इस दुनिया की युवतियाँ इतनी बेशरम हैं?

हंसी की आवाज गूँज उठी। नारद को तुरन्त अपनी गलती मालूम हुई। वे लडकियाँ नहीं थे। लडकियों की तरह बाल बढानेवाले, कपडा पहननेवाले हिप्पी कुमार ही थे। नारद बहुत लज्जित हुए।

हिप्पीकुमारों को जब पता चला कि बुडढे को भिक्षाटन से एक पैसे भी नहीं मिला है तब वे वहाँ से चले गये। नारद ने मन ही मन सोचा — दुनिया की नयी पीढी को मैं ने देखा। कलियुग इतना भयंकर है। सपने मे भी मेरा ऐसा विचार नहीं था। भूख मिटाने को वे पास के एक होटल की ओर निकले।

हल्का भोजन कर उठे तो उन्हें बिल मिल गया। बिल देखकर उन से खायी चीजें उसी क्षण पच गयीं। पैसा इतना अधिक? उन्होंने सोचा कि तुरन्त ही इस दुनिया से मुझे जाना है। यहाँ दो दिन ठहरने के लिए भी बहुत ज्यादा पैसा चाहिए। मेरे पास उतना पैसा नहीं है। भूखों मर जाऊँगा। होटल से बाहर आते ही उनके पेट मे भयंकर दर्द होने लगा। नारद को क्या मालूम था कि दुनिया की हर चीज मे मिलावट होती है। दर्द से वह एक कदम भी आगे नहीं बढ सकता था। एक दूसरे भिखारी की सहायता से वह सरकारी अस्पताल मे पहुँचा। लेकिन द्वार पालक ने उसे अन्दर जाने नहीं दिया। तब उस भिखारी ने उन से कहा कि द्वार पालक को आठ आना पैसा दें दो। नारद ने एक अठन्नी दी तो उन्हें अन्दर जाने की अनुमति मिली। अस्पताल के अन्दर भी बहुतों को पैसा देना पडा। किसी प्रकार वे अस्पताल से बाहर आये। डाक्टर वे एक परचा लिख दिया था। क्यों कि अस्पताल मे दवा नहीं है। किसी मेडिकल षोप से खरीदना पडेगा।

नारद तेजी से चल रहा था कि एक जीप आकर उनके पास रुक गयी। तुरन्त ही चार पाँच पुलीस के आदमियों ने उनको खींच कर जीप के अन्दर डाल दिया। उन्होंने देखा कि जीप मे और अनेक भिखारी बैठे हैं जिनको पुलिस ने शहर के अन्य मार्गों से पकडा था। पुलिस के एक अफ्सर ने कहा — "कल प्रधान मंत्री इस शहर मे आ

रहे हैं। उनके यहाँ से जाने के बाद सब को छोड दिया जाएगा।"

नारद को याद आयी — "भारत के प्रधान मंत्री की गरीबी हटाने की नीति की विष्णुलोक में काफी प्रशंसा हुई थी। लेकिन कलियुग मे इसी प्रकार गरीबी हटायी जाती है? अब समझा।"

नारद ने मन ही मन कहा — प्रधान मंत्री के जाने तक खाना जेल में मिलेगा। जेल से मुक्त होते ही इस मर्त्यलोग से मुझे बचना है।

अगले दिन सन्ध्या को नारद जेल से मुक्त हुए। जल्दी ही वे विष्णुलोक पहुच गये। उन्होंने भगवान विष्णु को समझाया — शिष्टों की रक्षा के लिए आप को मर्त्यलोक में जाने की जरूरत नहीं है।

"क्यों"? विष्णु ने पूछा

"क्योंकि वहाँ कोई भी शिष्ट नहीं है। सब के सब दुष्ट ही हैं। दुष्टों के निग्रह के लिए आप मत जाइए। उनका नाश स्वयं हो जाएगा।

★

खिलाडी

असीस पूवन्नूर, II PDC., S_2

डा. फिरोज अपने कमरे में बैठे आराम कर रहे थे। डाक्टरों के जीवन में आराम करने के लिए बहुत कम समय मिलता है। डा. फिरोज के आराम को भंग करते हुए फोण की घंटी बजने लगी। हलो .. कौन..... अस्पताल से.....अच्छा, जाबी.....हाँ वेट कीजीए..... अभी बुलाता हूँ।

डाक्टर ने अपनी बेटी को बुलाया। जाबी..... सुनो.....तुम्हारे लिए एक फोन आया है।

जाबी बीस साल की एक युवती है। वह कोलेज में एम. ए. में पढती है। देखने में स्वस्थ और सुन्दर युवती। पिता के बुलाने पर वह आकर फोन अटन्ट करने लगी।

हलो.....कौन.....सुराज। अच्छा, क्या बात है सुराज? क्यों चुप हो गये.....हाँ महबूब, मेरे महबूब को क्या हुआ। जल्दी बोलो। पैर टूट गया? अल्ला! फुटबाल खेलते समय? .....पैर काटना है .....तब महबूब की हालत उतनी बुरी है। जाबी के हाथ से रिसीवर नीचे गिर पडा। उसे ऐसा लगा जैसे कि उसके पैरों के नीचे से धरती फिसलती जा रही है। डा. फिरोज ने अपनी बेटी को संभाला। नहीं तो वह नीचे गिर जाती।

थोडी देर बाद वह काँपते स्वर में अपने पिता से बोली—पिताजी हमारे कोलेज के एक फुटबालर महबूब का पैर आज खेलने वक्त टूट गया है। मुझे आस्पताल तक जाना है। अभी महबूब का दोस्त सुरराज फोन कर रहा था कि महबूब का पैर काटने को डाक्टर बोल रहे हैं। मैं अब क्या करूँ पिताजी? महबूब मेरा.....मेरा.....हाँ, पिताजी महबूब को मैं बहुत चाहती हूँ। मुझे अस्पताल में महबूब के पास जाने दीजिए पिताजी।

डा. फिरोज के मुँह से एक भी शब्द नहीं निकला। अपनी इकलौती बेटी आज उनकी ओर देखकर क्या क्या कह रही है।

इस समय जाबी की माँ भी कमरे में आयी। अपनी बेटी को व्याकुल देखकर उसने कारण जानना चाहा। जाबी ने अपने प्रेमी के बारे में अपनी माता से भी कहा और महबूब के पास जाने के लिए उद्यत हो गयी। माँ को बडा क्रोध आया। वह बोलने लगी कि नहीं, तुम इस घर से अब बाहर कहीं नहीं जा सकोगी। कालेज में मुहब्बत करने के लिए हमने तुम्हें नहीं भेजा। लेकिन जाबी मानने को तैयार नहीं थी। वह अपने प्यारे के पास जाये बिना दम नहीं ले सकती थी। पिता का कार लेकर वह अस्पताल की ओर उडने लगी।

तब भी डा. फिरोज अपनी बेटी की, आधुनिक युवती की, मानसिक अवस्था और प्रेम के बारे में सोच रहे थे। वे चुपचाप जमाने की अद्भुत अवस्था के बारे में साचते ही रहे।

जाबी की माँ में उतनी विचार-शक्ति नहीं थी। वह इस जमाने से समझौता करने को तैयार नहीं थी। बेटी के ऐसे पतन या मुहब्बत के पंजे में पडने का दोष वह अपने पति को ही दे रही थी। आधुनिक शिक्षा और विदेशी ढंग के आचारों के प्रभाव को वह कोस रही थी। वह पति से प्रार्थना कर रही थी कि किसी न किसी प्रकार बेटी को इस मुहब्बत की बीमारी से बचाये।

डा. फिरोज इस का भी कोई जवाब नहीं दे सके। वे इस संबध में कुछ निर्णय लेने जा रहे थे।

जाबी सीधे अस्पताल पहुँची। उसने देखा कि ओपरेशन थियेटर से महबूब को बार्ड में लया गया है। जाबी कोदेखकर महबूब पहले कुछ बोल नहीं सका। उसकी आँखों में आँसू की बूँदें भर आयीं। उस ने धीरे से कहा — जाबी, अब मैं तुम्हारे लायक नहीं रहा। क्यों कि मेरा एक पैर नष्ट हो गया है। मैं किसी की भी जिन्दगी में एक बोझ बनना नहीं चाहता। तुम मुझे भूल जाओ। तुम्हारा अच्छा भविष्य खुद नष्ट न करो।

महबूब की बातें सुनकर जाबी सिसकियाँ भरने लगी। उसके लाल लाल गालों से आँसू बहते रहे। बडी कठिनाई से वह इतना बोल सकी – महबूब तुम कैसे ऐसी बातें कह सके। इस जिन्दगी में तुम्हारे सिवा और किसी को मैं नहीं स्वीकार कर सकूँगी। मैं तुम्हारा हृदय चाहती हूँ, मुहब्बत चाहती हूँ। तुम मुझे अब भी वह दे सकते हो। मैं इस संसार का सब कुछ छोड सकती हूँ। लेकिन तुम्हें, केवल तुम्हें नहीं। बोलो तुम्हारे दिल में केवल मैं हूँ। इस जिन्दगी की कोई भी शक्ति मुझे तुम से अलग नहीं कर सकती।

यह सब सुनते हुए डा. फिरोज पत्नी के साथ वहाँ आ गये। उन्होंने अपनी बेटी से कहा – "तुम दोनों लंबा रास्ता चल चुके। अब तुम्हें कोई भी अलग नहीं कर सकेगा।

प्रफुल्लचन्द्र राय

Soopikutty K., P₂

आचार्य चन्द्र राय भारत के उन लाडले पुत्रों में एक थे जिनके कारण भारत को नाज हो सकता है। यों तो संसार उन्हें एक श्रेष्ठ वैज्ञानिक के रूप में जानता है, लेकिन भारतवासी उनकी शिक्षा संबधी सेवा और राष्ट्रीय उद्योगों से भी अच्छी तरह परिचित हैं। रसायन-शास्त्र के ज्ञान को उन्होंने 'बंगाल केमिकल वोर्क्स' की स्थापना से संसार-भर में चमका दिया था।

राय का जन्म बंगाल के खुलना जिले के एक गाँव में सन् 1861 में हुआ था। इक्कीस साल की उम्र में वे स्काटलैण्ड गये। सन् 1888 में उन्होंने एडिन्बरो विश्व-विद्यालय से डि. एस. सी. की. उपाधि प्राप्त की।

स्वदेश लौटने पर प्रफुल्लचन्द्र राय के मन में अपने रासायनिक प्रयोगों को और आगे बढाने का बडा चाव हुआ। इसलिए बहुत थोडे वेतन में ही प्रसिडेंसी कालेज में सहायक आचार्य का पद स्वीकार कर लिया। अपने लगन से उन्होंने सन् 1896 में प्रयोगशाला में पारे का एक महत्वपूर्ण नया यौगिक (Mercurous Nitrite) तैयार किया। इस नयी खोज के कारण प्रफुल्लचन्द्र का नाम बहुत मशहूर हो गया। शीघ्र ही उन्होंने और नये यौगिक खोज निकाले।

कालेज में आचार्य राय विद्यार्थियों को बहुत रोचक ढंग से पढाते थे, कई वैज्ञानिक कठिन समस्याओं को बडे सरल ढंग से वे समझा देते थे। लगातार 30 वर्ष तक प्रसिडेंसी कालेज में शिक्षक का काम करने के बाद उन्होंने पेन्शन ले ली।

आचार्य राय ने कालेज में नौकरी पाने के कुछ साल बाद से ही बिना वेतन पढाने का निश्चय किया। परंतु विश्वविद्यालय उनके वेतन की रकम अलग जमा करता गया। धीरे-धीरे यह रकम ढाईलाख रूपये तक पहूँच गयी। आचार्य राय ने यह बडी रकम रसायन-शास्त्र में खोज करने वाले विद्यार्थियों को छात्रवृति के रूप में दे दी।

आचार्य राय बडे देश-भक्त थे। महात्मागाँधी के उपदेशों पर उन्होंने खादी-वस्त्र धारण कर लिया था और प्रतिदिन चर्खा कातते थे। वे हमेशा सादी धोती, कुर्ता और चप्पल ही पहनते थे। बाढ या अकाल के समय घर-घर जाकर चदा इकट्ठा किया करते थे। एक बार जब ये चन्दा माँगने एक धनवान के घर पहूँचे तो द्वारपालक ने उन्हें भिखारी समझकर बाहर रोक दिया था।

रासायनिक द्रव्यों के लिए भारत से करोडों रूपये विदेश जाते थे। यह देख कर देशभक्त राय के मन में बडा दुःख हुआ। इसलिए उन्होंने 'बंगाल केमिकल एण्ड फार्मस्यू वोर्क्स (Chemical and Pharmaceutical Works, Bengal) नामक संस्था की स्थापना की। यहाँ कई महत्वपूर्ण रासायनिक चीजें बनती हैं। यह संस्था आज एशिया-भर में अपने ढंग की महान संस्था है। इस संस्था को पूँजी जब बहुत बढ गयी तो आचार्य राय ने इसे रास्ट्र को सौंप दिया। आचार्य प्रफुल चन्द्र राय के सबसे महत्वपूर्ण कार्यों में 'इण्डयन स्कूल आफ केमिस्ट्री' (Indian School of Chemistry) और 'इण्डयन केमिकल सोसाइटी' (Indian Chemical Society) की स्थापना भी है।

काचार्य राय ने अपना सारा जीवन ब्रह्मचारी रहकर बिताया। उनका जीवन त्याग और उदारता से भरा था।